Notification No. : 552/2024 (Dated – 25/01/2024)

Name of Scholar : **Manish Kumar**

Name of Supervisor : **Prof. Durga Prasad Gupt**

Name of Department : **Hindi**

Topic of Research : **CHANDRAKANT DEOTALE KI KAVITAON KA SAMAJSHASTRIYA ADHYAYAN**

संक्षिप्त शोध-सार (Findings)

कवि चंद्रकांत देवताले की रचनाशीलता के सन्दर्भ में उनके सामाजिक व्यक्तित्व पर विशेष दृष्टि रखने की कोशिश की गयी है. गोल्डमान जैसा साहित्य का समाजशास्त्री भी कविता के प्रश्नों पर मूक क्यों हो जाता है; पूरनचन्द्र जोशी ने 'गोदान' का मानीखेज़ समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया है लेकिन कविता से दूरी क्यों बनाई! इस वस्तुस्थिति के कारणों की पड़ताल करते हुए कविता के समाजशास्त्र की चुनौतियों को समझने का प्रयत्न किया गया है.

चंद्रकांत की कविता में स्त्रियों की जो छवि मौजूद है वह बहुत प्रयास करके उन्होंने नहीं बनाई है बल्कि उनके जीवन में ऐसी स्त्रियाँ सच में थीं जिन्होंने उनकी स्त्री-दृष्टि को उरूज तक पहुँचाने में जाने-अनजाने अपनी भूमिका अदा की. अगाध ममत्व से भरी माँ, दाम्पत्य को माधुर्यपूर्ण दैनंदिन जीवन-संगीत बनाने वाली पत्नी और झूठे पौरुष को हतदर्प कर विनम्र पिता बनाने वाली बेटियां पाने वाले कवि चंद्रकांत की कविता में स्त्री उनके जीवन के रथ-संचालक का कार्य करती है तो आश्चर्य नहीं होता. सारतः उनकी कविताओं और उनके समाजीकरण को ध्यान में रखकर जेंडर न्यूट्रल होते हुए ये कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति स्त्रीवादी (Feminist) होगा, स्त्रीद्वेषी (Misogynist) होगा, इन दोनों स्थितियों के बीच कहीं होगा या इन सबसे इतर कहीं होगा इसका निर्धारण काफ़ी हद तक उसके समाजीकरण में मौजूद स्त्रियों के व्यवहार से होता है; कवि देवताले भी इसका अपवाद नहीं.

चंद्रकांत की आत्मगत अभिव्यक्ति प्रकारांतर से व्यक्तिगत अभिव्यक्ति होते हुए वृहत्तर अर्थों में सामाजिक अभिव्यक्ति है. उनकी कविताओं में अभिव्यक्त श्रम का स्वरूप उनकी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति से नाभिनालबद्ध है. लोकतान्त्रिक विडम्बनाओं को समझने की दृष्टि का विकास कवि चंद्रकांत के कवि-व्यक्तित्व, प्राध्यापक-व्यक्तित्व, पत्रकार-व्यक्तित्व और सजग नागरिक-व्यक्तित्व आदि का सम्मिलित प्रतिफलन है.

चंद्रकांत देवताले का काव्य-शिल्प उनके सामाजिक-व्यक्तित्व और साहित्य-मात्र के प्रति उनके दृष्टिकोण से अविच्छिन्न है. राजदरबारों के श्रृंगारिक स्वप्नों में डूबे कवियों की ही भाषा कोमलकांत और संकुचित शब्दावली से गुंथ कर एक हाथ कंज तो एक किबाड़ पर रख सकती है. तपते पठार के कवि के यहाँ आग का आक्रोश और पत्थरों का नुकीलापन ही दर्ज होगा. लकड़बग्घे की क्रूरता ही वहाँ प्रभु-वर्ग के सामाजिक अन्याय का प्रतीक बनेगी.

चंद्रकांत देवताले की पुस्तकें हिंदी के महत्वपूर्ण प्रकाशकों द्वारा पाठकों के सामने आई हैं. इनमें राजकमल, वाणी, किताबघर प्रकाशन आदि प्रमुख हैं. इन प्रतिष्ठित प्रकाशकों की कवि चंद्रकांत की कविताओं के प्रकाशन व वितरण में समुचित भूमिका रही है. अतः चंद्रकांत देवताले को कविताओं ने जहाँ तक भी विस्तार पाया है उस सम्बन्ध में उनकी कविताओं का वितरण पक्ष भी काफ़ी सहायक भूमिका में रहा है. कवि की कविताओं के पाठकों में यदि न्यूनतम भावयित्री प्रतिभा न होगी तो उनके लिए यह कविताएँ शायद अभीष्ट न होंगी.